बी० ए० पार्ट–2 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अतिथि व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

प्रकृति के कवि गोपाल सिंह 'नेपाली'

नेपाली का काव्य प्रकृति का गर्वमान है। प्रकृति सृष्टि की हो अथवा जीवन की, उसकी संपूर्णता को नेपाली ने अपनी काव्य–यात्रा में आत्मसात किया है। प्रकृति जीवन–सहचरी है और मानव के राग–विराग, सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, हास–परिहास, उत्थान–पतन, जय–पराजय की ललित अभिव्यक्ति का माध्यम भी। प्रकृति बहुरंगी है। यह जगत की विविधता के साथ परिवर्तन को अपने में समाहित करने में समर्थ भी हैं। हिन्दी कविता में प्रकृति आरंभ से ही कवियों की कल्पना का आदि स्रोत रही है। संस्कृत कवियों को छोड़ भी दे ंतो हिंदी में विद्यापति की रचनाओं में उद्दीपनात्मक माध्यम के रूप में प्रकृति अपनी संपूर्ण ऊर्जा के साथ विप्रलंभ श्रृंगार को चरमोत्कर्ष प्रदान करती है और मिलन के क्षण को आह्लादक बनाती है। भक्तिकालीन काव्य में प्रकृति अधिकांशतः उद्दीपनात्मक एवं उपदेशात्मक सत्ता प्राप्त करती है। रीतिकाव्य की प्रकृति भी सामान्यतः आलंकारिक और उद्दीपनात्मक ही है। बिहारी, देव, मतिराम, पद्माकर आदि की कविताओं में प्रकृति कहीं–कहीं मानवी रूप धारण करती है–

''छकि रसाल सौरभ सने मधुर माधवी गंध

ठौर –ठौर झूमत झपत भौर–भौर मधु अंध।''

आधुनिक युग के काव्य में प्रकृति का आलंबनात्मक एवं मानवी रूप चरम उत्कर्ष को प्राप्त करता है। भारतेन्दु तथा द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रकृति अपने नए रूप में प्रस्तुत होती है।

छायावादी कवियों ने तो प्रकृति के विविध रूपों को उसके मानवीकरण के साथ आत्मसात किया। मुकुटधर पांडेय, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी आदि की कविताओं में तो प्रकृति अपनी संपर्णता के साथ प्रस्तुत होती है। जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी वर्मा भी प्रकृति के माध्यम से ही अपनी अनुभूतियों एवं जीवन–दर्शन की अभिव्यक्ति को मूर्त करते हैं। जहाँ जयशंकर प्रसाद 'बीती विभावरी जाग री', जैसी अनगिनत कविताओं में मानवीय अस्मिता, मूल्य एवं प्रगतिशीलता को स्वर देते हैं, वहीं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में प्रकृति नवयौवना, सौंदर्य एवं प्रेम की अभिव्यंजिका तथा कांति की प्रतिरूपा है। 'जूही की कली' 'यामिनी' 'बादल राग' आदि कविताओं में प्रकृति के मानवीकरण के विविध रंगों को देखा जा सकता है–'प्रिय यामिनी जागी! अलस पंकज दृग अरूण मुख /तरूण अनुरागी।'

प्रकृति छायावादी कविता का प्रमुख कारक तत्व है। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रकृति पूर्णतः मानवी है और मानवीय सौंदर्य को पूर्णता प्रदान करनेवाली भी। महादेवी वर्मा के गीतों में भी प्रकृति का मनोरम मानवीकरण हुआ। प्रकृति के साहचर्य में नारी –मन की पीड़ा किस तरह भावगाथा बन सरसने लगती है, उनके गीतों में इसके अनगिन रंग देखने को मिल जाएँगे।

प्रकृति ने हर काल में कवियों को मोहा है, उनकी रचनाशीलता को अपने स्पर्श से सुशोभित किया है और जीवन–जगत के दर्शन की अभिव्यक्ति को आकर्षक बनाया है। गीतों के राजकुमार गोपाल सिंह नेपाली का उदय ही प्रकृति के क्रोड़ से हुआ, इसलिए जब उसने गाना शुरू किया तो प्रकृति का उदात्त सौंदर्य उसमें सहज, सरल एवं सौम्य रूपों में घुलता चला गया। उनके काव्य–संग्रह को देखा जा सकता है–'पंछी', 'उमंग', 'रागिनी', 'पंचमी', 'नीलिमा', 'नवीन', 'हिमालय ने पुकारा', इन नामों में ही प्रकृति के रंग दिखाई पड़ते है। वे मुख्यतः प्रेम और प्रकृति के कवि है। नेपाली के काव्य में राष्ट्र और राष्ट्रभूमि, जीवन और जीवन–सत्य स्वच्छंदता के धरातल पर प्रकृति –संवलित स्वर पाते है। वह अपनी राह के अनुपम एवं अप्रतिम राही कवि हैं। उमंग में वे कहते भी हैंः–

''मैं हूँ अपना आप नमूना

मेरा अपना ढंग है।''

छायावादोत्तर हिंदी कवियों में मस्ती का भाव केंद्रीय स्वर है, जो स्वाधीनता आंदोलन के प्रति उत्सर्ग भावना की देन है और जिंदादिली की यह भावना भौतिक एवं ऐहिक जीवन की अकुंठ अभिव्यक्ति । वह स्वयं प्रकाश है। क्रांतिदीप हैं। चेतना और जागृति, मानवीय अस्मिता एवं स्वतंत्रता के वैतालिक कवि नेपाली, जो कहते है–

''तन का दीया, प्राण की बाती,

दीपक जलता रहा रात–भर

एक फूँक के लिए प्राण का,

दीप है?

मचलता रहा रात–भर!''

पूजा का 'सुमन' भी समर्पण है।

यह समर्पण सबके अभिनंदन के लिए प्राकृतिक सरस सोम रस का घोल है–

''मैं सरस सोम रस घोल–घोल,

तारों–सा खिड़की खोल–खोल,

पीपल पल्लव–सा डोल–डोल,

विहंगों की बोली बोल–बोल,

करता हूँ सबका अभिनंदन,

तुम कब समझोगे मेरे मन,

मैं तो पूजा का एक सुमन।''

वास्तव में ''प्रकृति नेपाली के गीतों में अपनी पूरी सत्ता के साथ उपस्थित है। उनके काव्य संसार के आँगन में हरी घास है, देहरादून के हरे–हरे बेर हैं, आस–पास पीपल के पत्ते गोल–गोल हैं और है लघु सरिता का बहता जल।'' देखा जाए तो यहाँ प्रकृति का लघु रूप ही नहीं, अनंत तक फैला हुआ आकाश भी है चाँद, सितारे, बिजली, बादल के साथ। षड्–ऋतुओं में वसंत और पावस कवि नेपाली को सर्वाधिक आकृष्ट करते हैं। वसंत में कवि का प्रकृति–मन झूम उठता हैः–''आ रहे तुम बनकर मधुमास,

और मैं ऋतु का पहला फूल.....

पुरूष तुम फैला देते बाँह,

प्रकृति मैं जाती उन पर झूंल''(पंचमी) प्रकृति पुरूष के शाश्वत संबंधों को नेपाली ने बड़ी रम्यता से अभिव्यक्त किया है। उनकी कविताओं में दोनों एकाकार और एकात्म हो जाते हैं। वे आत्मीय अनुभूतियों का अंतरंग लोक रचते हैं, जहाँ प्रेम, श्रृंगार की मादकता है। नेपाली प्रकृति की चित्रात्मकता, चाक्षुषता, श्रवणता, प्राण–बिंब के साथ–साथ प्रकृति की सुषमा को, उसके सौंदर्य को, उसके स्पंदन और धड़कनों को जीवंत बना देते हैं, मादक बना देते हैं, किन्तु उसकी अश्लीलता और मर्यादा की सीमा का उल्लंघन कहीं होने नहीं देते। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

''फूलों पर मधुपों का गुनगुन,

फूल चुग्गी का मंजुल रूनझुन,

सुग्गों का फल खाना चुनचुन।''

नेपाली ने ही उस दौर में बोध कराया कि प्रकृति की छवि अभिव्यक्ति ही नहीं होती, ध्वनित–प्रतिध्वनित भी होती हैः–''तुंग हिमालय मानस अंचल,

निर्मल जल की धारा,

मंजुल कलकल सुरभित शीतल,

वन प्रातंर यह सारा।''

तत्वतः और तथ्यतः प्रकृति नेपाली की रचनाओं में मानवी छवि, आकषर्ण और मधरुता के साथ चित्रित हैः–''खोजती फिरी गुहा से गुहा,

तिमिर को किरणों की फुलझड़ी''

नेपाली के काव्य में प्राकृतिक सौंदर्य नाद–सौदंर्य और लयात्मकता से ओतप्रोत है–''खड़ी–खड़ी फुलवारी फूले,

हार पिसरोए बैठ गुजरिया,

बरसाए जलधार बदरिया,

भींगे जग की हरी चदरिया।''

यहाँ जीवन की प्रकृति के मानवीकरण से उसके उदात्त सौंदर्य को उद्‌घाटित किया गया है। काव्य सौंदर्य के विधान से अलंकार आदि के द्वारा भी प्रकृति की सुषमा को व्यंजित किया गया है।

वास्तव में प्रकृति यदि वीणा है तो उसका तार कवि नेपाली की रचनाधर्मिता है–

''प्रकृति मुखरित है वीणा एक, और मैं उस वीणा का तार।''

वीणा के तारों को नेपाली ने 'पंछी' से 'हिमालय ने पुकारा' तक के गीतों में झंकृत किया, उससे कई–कई सुर साधे और जीवन–जगत के बहुरंग को अपने गान में आत्मसात किया। नेपाली की कविताओं से गुजरते हुए कई बार यह द्वंद्व उभरता है कि नेपाली ने अपने गीतों में प्रकृति को उसकी संपूर्णता में मूर्त किया या फिर प्रकृति ने ही अपने वैभव से जीवन–जगत को परिचित कराने के लिए नेपाली को चुना। जो हो, ''शीतल तरू छाया के नीचे सुदंर पल्लव वन में''(पंछी) एकांत विचरण करनेवाले कवि नेपाली –''यह लघु सरिता का बहता जल कितना शीतल कितना निर्मल।''(पंचमी)

यह प्रकृति पुत्र नेपाली ही थे, जिसने हिमालय के खतरे में पड़ने पर 'वन मैन आर्मी' बन देशवासियों को जगाया–''कह दो कि हिमालय तो क्या पत्थर भी न देंगे,

लद्याख की क्या बात, बंजर भी न देंगे,

आसाम हमारा है रे मरकर भी न देंगे,

है चीन का लद्दाख तो तिब्बत है हमारा,

चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।''

'मेरा धन है स्वाधीन कलम' के जयघोष के साथ प्रकृति के बहुरंग का गर्वमान करते–करते अंततः 17 अप्रैल, 1963 को प्रकृति–पुत्र कवि नेपाली की नश्वर काया अग्निपुंज में समाहित हो गई, लेकिन उनकी आवाज आज भी गूँज रही हैः–

''चाँद बना दुल्हा–सा आया तारों की बारात में,

ओ परदेसी बालम आ सजा आधी –आधी रात में,

बेला खिली, खिली है जूही, खिला हुआ कचनार है,

रजनीगंधा की खुशबू का लगा हुआ बाजार है।''

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नेपाली के प्रकृति–चित्रण का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वे प्रकृति के सम्रग कवि हैं, संपूर्ण प्रकृति के कवि है। उनकी समस्त कविताओं का लगभग अर्द्धांश प्रकृति को समर्पित है। यह प्रमाण है कि प्रकृति के प्रति नेपाली का प्रेम किसी कालाविधि या प्रवृति के आग्रह के कारण नहीं है। वे नैसर्गिक रूप से प्रकृति के कवि है। आलंबन, उद्दीपन, मानवीकरण के रूप में प्रकृति–चित्रण के साथ उन्होंने दार्शनिक भावना की अभिव्यक्ति और रहस्य–भावना की पृष्ठभूमि के रूष्प में भी प्रकृति का चित्रण किया है। उनका प्रकृति–चित्रण सहज होने के बावजूद विशिष्ट है, स्वाभाविक होने के साथ सम्मोहक है। निश्चित रूप से वे आधुनिक हिंदी कविता में न केवल प्रकृति के प्रतिनिधि कवि हैं, बल्कि उसके अकेले संपूर्ण कवि भी हैं।